सृजनात्मकता
(CREATIVITY)

द्वारा

डॉ0 श्रवण कुमार

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय),

प्रयागराज

प्रस्तावना

वैचारिक शक्ति के फलस्वरूप ही रचनात्मक व सृजनात्मक शक्ति का विकास होता है जो कि किसी भी राष्ट्र के लिए आवश्यक है। सृजनात्मक व रचनात्मक शक्ति से राष्ट्र एवं समाज को नवाचार का प्रोत्साहन मिलता है। वर्तमान युग में छात्र भी मानसिक द्वंद, अस्पष्ट लक्ष्य, विभिन्न विचारधाराओं के बीच सृजनात्मक व रचनात्मक प्रवृत्ति खो रहा है। **जे0 कृष्णमूर्ति जी** के अनुसार *जहाँ द्वंद है वहाँ सृजनशीलता असंभव है।*[1]

राष्ट्र के विकास व समाज में बेहतर समन्वय, संतुलन, सृजनात्मक व रचनात्मक रहने के लिए एकाग्र होना आवश्यक है। **आचार्य अरविन्द जी** ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा है कि *तुम जीवन में चाहे कुछ भी करना चाहो, एक चीज एकदम अनिवार्य है और हर चीज के आधार में है, वह है ध्यान के एकाग्र की क्षमता।*[2]

शिक्षा–व्यवस्था के निजीकरण की अवधारणा के विकसित होने के साथ ही निजी विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, इण्टर कॉलेजों और पब्लिक स्कूलों की संख्या भी देश में तेजी से बढ़ी है। शिक्षा के निजीकरण ने जहाँ एक ओर ज्ञान की सुलभता के अवसरों की वृद्धि की है, वहीं दूसरी ओर शिक्षण–प्रशिक्षण प्रविधियों, शिक्षा के क्षेत्र में तकनीक के अनुप्रयोगों, कक्षाओं के स्वरूप बदलावों, सूचनाओं की असीमित उपलब्धताओं और व्यावहारिकताओं को बढ़ावा दिया है वहीं शिक्षा के बढ़ते बोझ के कारण विद्यार्थी अपने जीवन को पाठ्यपुस्तकों तक ही सीमित रख पा रहा है। बच्चों में बढ़ते पाठ्यपुस्तकों के बोझ के साथ–साथ विद्यालय में दिये जाने वाले प्रोजेक्ट कार्य के द्वारा यदि विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में वृद्धि के कार्य किये जा रहे हैं वहीं इतना अधिक गृह कार्य

दिया जा रहा है कि वह न तो पाठ्यपुस्तक में ही रुचि ले पा रहा है और न ही प्रोजेक्ट वर्क में अपनी सृजनात्मकता को ही दिखा पा रहा है।

पाठ्यपुस्तकों की यह रूढ़ दुनिया सृजनात्मकता की दुश्मन है। पाठ्यपुस्तक की इस जकड़बंदी के चलते न अध्यापक की और न ही बच्चे की कल्पनाशीलता और सूझबूझ उभर पाती है। पाठ्यपुस्तक पर अतिनिर्भरता कल्पनाशीलता के रास्ते अवरूद्ध कर देती है। जबकि सृजनात्मकता के लिए कल्पनाशीलता का होना आवश्यक है। जो जितना अधिक कल्पनाशील होगा उतना अधिक सृजनात्मक। इस बात को महसूस करते हुए ही **महात्मा गाँधी एवं अन्य समकालीन** शिक्षाविद् पाठ्यपुस्तक मुक्त शिक्षा प्रणाली की बात करते हैं। **गाँधी जी** ने हरिजन' के एक लेख में लिखा था– *पाठ्यपुस्तकों से पढ़ाने वाला शिक्षक अपने छात्रों को मौलिकता नहीं सिखा सकता है। वह स्वयं पाठ्य पुस्तकों का गुलाम हो जाता है और मौलिक होने का कोई अवसर नहीं ढूँढ पाता।*

एन0सी0एफ0 2005 भी पाठ्यपुस्तक पर अतिशय जोर देने के दुष्प्रभावों की ओर हमारा ध्यान खींचता है– *अगर अपने विकास के दौर में विद्यार्थी अधिक समय यथार्थ विश्व के अलावा किताबों की दुनिया में बिताते हैं तो बहुत संभावना उनके टूट जाने की रहती है। शिक्षा का उद्देश्य नकारात्मक बन जाता है। यह विद्यार्थियों के दिमाग को दो टुकड़ों में बाँट देता है। वह एक ऐसी किताबी दुनिया को याद करने में लगा रहता है जिस पर उसका कोई वश नहीं होता।*

जबकि **पाठ्यचर्या 2005** में इस बात का स्वागत किया गया कि पाठ्यपुस्तकों को बच्चों के रूचि के अनुकूल और रचनात्मक गतिविधियों के अवसर प्रदान करने वाली बनाना होगा।

वैज्ञानिक, तकनीकी तथा औद्योगिक विकास के आधुनिक युग में विभिन्न क्षेत्रों के अंतर्गत नित प्रतिदिन नूतन अविष्कार हो रहे हैं। इनमें से अधिकांश अविष्कारों के पीछे जहां वैज्ञानिकों का अथक परिश्रम है, वहीं उनकी सृजनात्मकता का भी योगदान कम नही है। पहले यह माना जाता था कि केवल लेखक, कवि, चित्रकार, संगीतकार आदि व्यक्ति ही सृजनात्मक होते हैं परन्तु अब यह माना जाने लगा है कि मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सृजनात्मकता पाई जाती है – किसी व्यक्ति में कम मात्रा मे सृजनात्मकता होती है तथा किसी में अधिक मात्रा में सृजनात्मकता होती है। मानवीय जीवन को सुखमय बनाने के लिए नवीन अविष्कार करने तथा समस्याओं का समाधान खोजने के कार्य में सृजनात्मकता अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

वर्तमान समय में तीव्र गति से हो रहे वैज्ञानिक, तकनीकी तथा औद्योगिक प्रगति व विकास तथा आधुनिकीकरण ने मानव जीवन को इतना जटिल तथा समस्याग्रस्त बना दिया है कि इन समस्याओं के समाधान के लिए जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सृजनात्मकता की आवश्यकता महसूस की जाने लगी है। आज के समस्याग्रस्त जटिल समाज तथा प्रतियोगितापूर्ण समाज में सृजनात्मक व्यक्तियों की अत्यन्त मांग है।

मानव विकास तथा सभी प्रकार की उन्नति एवं प्रगति का आधार सृजनात्मक शक्ति है, शैक्षिक दृष्टि से सृजनात्मकता का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है।

उद्देश्य

- सृजनात्मकता का अर्थ
- सृजनात्मकता की परिभाषा
- सृजनात्मकता का मापन
- सृजनात्मक शिक्षण
- सृजनात्मकता की आवश्यकता
- सृजनात्मकता का महत्व
- सृजनात्मकता का स्वरूप–
- सृजनात्मकता का स्तर
- सृजनात्मक व्यक्तित्व की विशेषतायें
- सृजनात्मक में वृद्धि हेतु किये जाने वाले प्रयास

सृजनात्मकता का अर्थ –

सृजनात्मकता अंग्रेजी भाषा के Creativity का हिन्दी रूपान्तरण है। जिसका अर्थ होता है– मौलिकता। सृजनात्मक चिन्तन में साहचर्य के तत्वों का मिश्रण रहता है। उस कार्य को सृजनात्मक कार्य कहते हैं जिसके करने का परिणाम नवीन हो अतः उस प्रक्रिया को सृजनात्मकता कह सकते हैं जो हमको नवीन ढंग से सोचने और विचार करने को प्रेरित करे।

ड्रैवडाल के अनुसार, *सृजनात्मकता व्यक्ति की उस क्षमता को कहा जाता है जिससे कुछ वह ऐसी नई चीजें, रचनाओं या विचारों को पैदा करता है जो नया होता है एवं जो पहले से उसे ज्ञात नहीं होता। यह एक काल्पनिक*

क्रिया या चिन्तन संश्लेषण हो सकता है इसमें गत अनुभूतियों से उत्पन्न सूचनाओं का एक नया पैटर्न और सम्मिश्रण सम्मिलित हो सकता है। यह निश्चित रूप से उद्देश्य पूर्ण या लक्ष्य निर्देशित होता है न कि निराधार स्वप्न चित्र होता है यह वैज्ञानिक कलात्मक या साहित्यिक रचना के रूप में भी हो सकता है।

सृजनात्मकता की परिभाषा–

हैमोविज तथा हैमोविज के अनुसार, *नव परिवर्तन लाने, अविष्कार करने तथा तत्वों के इस ढंग से रखने की क्षमता जैसे वे पहले कभी रखे नहीं गये हों ताकि उनका महत्व या सुन्दरता बढ़ जाए को ही सृजनात्मकता की संज्ञा दी जाती है।*

क्रो एवं क्रो0 के अनुसार, *सृजनात्मकता मौलिक परिणामों को अभिव्यक्त करने की मानसिक प्रक्रिया है।*

स्टीन के अनुसार, *यदि किसी प्रक्रिया के परिणामस्वरूप कोई नवीन कार्य सम्पन्न होता है तथा किसी अमुक समय के लिए वह किसी समूह विशेष द्वारा संतोषप्रिय उपयोग एवं लाभकारी समझकर स्वीकार कर लिया जाता है, तो वह प्रक्रिया अवश्य ही सृजनात्मक होगी।*

इसरेली एन. के. के अनुसार, *सृजनात्मकता किसी नवीन वस्तु का निर्माण एवं प्रणयन करने की सामर्थ्य अथवा क्षमता है।*

बैरन के शब्दों में, *सृजनात्मकता का सार है पहले से विद्यमान वस्तुओं तथा तत्वों को मिलाकर नये योग बनाना।*

जेम्स डेवर का कथन है कि *सृजनात्मकता मुख्यतया नवीन रचना या उत्पादन में होती है।*

गिलफोर्ड के अनुसार, सृजनात्मकता के अन्तर्गत पांच मानसिक व्यापार पाये जाते हैं–

1. ग्रहणात्मक व्यापार
2. केन्द्राभिमुख चिन्तन
3. केन्द्राविमुख चिन्तन
4. स्मृति तथा
5. मूल्यांकन

उनके अनुसार सृजनात्मकता को सृजनात्मक कार्य क्षमता, सृजनात्मक उत्पादन से सम्बन्धित किया जा सकता है तथा विभिन्न व्यावहारिक क्षेत्रों में सृजनात्मक चिन्तन का भिन्न अर्थ होता है।

उपर्युक्त समस्त परिभाषाओं को समन्वित करते हुए यह कहा जा सकता है कि सृजनात्मकता एक ऐसी योग्यता है, जो किसी समस्या का विद्धतापूर्ण समाधान करने के लिए नवीनतम विधियों एवं स्थितियों का सहारा लेती है तथा व्यक्ति के रचनात्मक उत्पादन में मौलिकता, प्रवाहता, विस्तार, लचीलापन आदि कारक सन्निहित रहते हैं। सृजनात्मक कार्य में कोई नवीन खोज या पुरानी धारणाओं एवं प्रारूपों का शोध द्वारा मूल्यांकन भी किया जाता है सृजनात्मकता में अनेक योग्याताओं या गुणों यथा– समस्याओं के प्रति सजगता, विचार में गति, लचीलापन, मौलिकता, नवीनता तथा जिज्ञासा का मिश्रण होता है जिससे व्यक्ति रचनात्मक उत्पादनों को करता है।

सृजनात्मकता का मापन

सृजनात्मकता की विभिन्न परिभाषाओं के अवलोकन तथा विश्लेषण से स्पष्ट है कि सृजनात्मकता को संवेदनशीलता, जिज्ञासा, कल्पना, मौलिकता खोजपरकता, लचीलापन, प्रवाह, विस्तृत्ता, नवीनता आदि के सन्दर्भ में समझा

जा सकता है। सृजनात्मकता के समानार्थी यह सभी प्रत्यय वैज्ञानिक अनुसंधानों कला–कृतियों, संगीत, रचना, लेखन व काव्य कला, चित्रकला, भवन निर्माण आदि सृजनात्मक कार्यो में परिलक्षित होते हैं। सृजनात्मकता के चार प्रमुख मापन निम्नवत हैंः–

1. **प्रवाह** – प्रवाह से तात्पर्य किसी दी गई समस्या पर अधिकाधिक प्रत्युत्तरों से है। प्रवाह को पुनः चार भागों में बांटा जा सकता है – वैचारिक प्रवाह, अभिव्यक्ति प्रवाह, साहचर्य प्रवाह तथा शब्द प्रवाह। वैचारिक प्रवाह में विचारों के स्वतन्त्र सत्त प्रस्फुटन को प्रोत्साहित किया जाता है।

2. **विविधता** – विविधता से अभिप्राय किसी समस्या पर दिये गये प्रत्युत्तरों या विकल्पों में वैभिन्नय के होने से है। इससे ज्ञात होता है कि व्यक्ति के द्वारा प्रस्तुत किये गये विकल्प या उत्तर एक–दूसरे से कितने भिन्न हैं। विविधता की तीन विमाएं हो सकती हैं –आकृति स्वतः स्फूर्त विविधता, आकृति अनुकूलन विविधता तथा शाब्दिक स्वतः स्फूर्त विविधता आकृति स्वतः स्फूर्त विविधता। से तात्पर्य किसी वस्तु या आकृति के रूप को किसी अन्य रूप में परिवर्तित करने की विधियों की विविधता से है।

3- **मौलिकता** – मौलिकता से अभिप्राय व्यक्ति के द्वारा प्रस्तुत किये गये विकल्पों या उत्तरों का असामान्य होने से है। इसमें देखा जाता है कि दिये गये विकल्प या उत्तर सामान्य या प्रचलित विकल्पों या उत्तरों से कितने भिन्न हैं, दूसरे शब्दों में मौलिकता मुख्य रूप से नवीनता से सम्बन्धित होती है।

4. **विस्तारण** – विस्तारण से तात्पर्य दिये गये विचारों या भावों की विस्तृत व्याख्या, पूर्ति या प्रस्तुतीकरण से होता है। विस्तारण को दो भागों में बांटा जा सकता है– शाब्दिक विस्तारण तथा आकृति विस्तारण।

सृजनात्मक शिक्षण–

सृजनात्मकता का शिक्षण किया जा सकता है अथवा नहीं, इस सम्बन्ध में दो उपागम हैं–

(1) सरलीकरण (2) शिक्षण

कुछ मनोवैज्ञानिक, जैसे क्यूबी का विचार है कि सृजनात्मकता का शिक्षण नहीं हो सकता है। सरलीकरण के लिए सृजनात्मक चिन्तन में बाधक तत्त्वों को दूर किया जाना चाहिए। वह कहता है–

''.....चिन्तन का शिक्षण नहीं हो सकता है। शिक्षा का कार्य अपेक्षाकृत हमें यह दिखाना है कि चिन्तन योग्यता जो मानव मस्तिक में निहित है को कैसे रोका न जाय।''[3]

परन्तु अनेक प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक, जैसे गिलफोर्ड, पारनीस तथा टोरेन्स मानते है कि सृजनातमकता का शिक्षण किया जा सकता है– क्योंकि यह सीखा गया व्यवहार है। गिलफोर्ड कहता है–

''बहुत से व्यवहारों के समान, सृजनात्मक क्रिया कुछ हद तक सम्भवतः अनेक सीखे गये कौशलों का प्रतिनिधित्व करती है। इन कौशलों में वंशानुक्रम द्वारा सीमा रखी गयी हो सकती है, परन्तु मैं जानता हूँ, कि उन सीमाओं के अन्तर्गत सीखने के द्वारा कोई कौशल का विकास कर सकता है।''[4]

अतः सृजनात्मक बालक के शिक्षण और सृजनात्मकता के विकास के लिए दोनों उपागमों को अपनाना उचित होगा, अर्थात् अवरोधक तत्त्वों को दूर करना और शिक्षण की यथोचित विधियों और तकनीकों का प्रयोग करना।

सृजनात्मकता की आवश्यकता

लारेन्स महोदय के अनुसार, बालकों में सृजनशीलता की माप करना निम्नलिखित कारणों से आवश्यक है–

1. बालकों में सृजनात्मक व्यवहार की माप हमारी मन और व्यक्तित्व सम्बन्धी समझ में वृद्धि कर देती है।
2. बालकों की सृजनशीलता का माप व्यक्तिगत मिश्रण में सहायक होती है।
3. सृजनशीलता की माप मानसिक वृद्धि के निर्देशन में सहायक होती है। मानसिक स्वास्थ्य के स्तर का संकेत देती है एवं सुचारात्मक कार्यक्रमों का आयोजन करने के सम्बन्ध में सूत्र प्रदान कर देती है।
4. बालकों में सृजनात्मक व्यवहार का माप कार्यक्रम, पदार्थों एवं प्रविधियों के मूल्यांकन में सहायक होती है।
5. विद्यार्थियों में सृजनात्मक व्यवहार की माप–वृद्धि करने की क्षमता को प्रबल करती है तथा भविष्य में निर्देश की आवश्यकता प्रस्तुत करती है।
6. सृजनात्मकता ही समाज और राष्ट्र के विकास में सहायक होती है। इसके विकास पर प्रारम्भिक कक्षाओं से ही ध्यान दिया जाय तो प्रत्येक क्षेत्र में हमें सृजनात्मक व्यक्तित्व प्राप्त हो सकते हैं। जो देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देंगे।
7. भारतीय शिक्षा में विद्यार्थियों में सृजनात्मक योग्यता के मापन की आवश्यकता का अनुभव किया जा रहा है। विशेषकर राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रमों में इस दिशा में सराहनीय कार्य किया जा रहा है।

सृजनात्मकता का महत्व

सृजनात्मकता का शिक्षा में विशेष महत्त्व है। शिक्षा के द्वारा बालकों की सृजनात्मक शक्तियों का विकास किया जा सकता है जिनके द्वारा व्यक्ति जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सफलता प्राप्त कर सकता है। आधुनिक युग की अधिकांश सफलताओं का श्रेय सृजनात्मकता को दिया जा सकता है। सृजनात्मक शिक्षा व्यक्ति को ऐसे अवसर प्रदान कर सकती है कि उसमें अर्न्तनिहित सृजनशीलता प्रस्फुटित होकर जीवन की समस्याओं का समाधान करने तथा नवीन कार्य करने में सहायक होती है।

मानवीय सृजनशीलता के विभिन्न क्षेत्र हैं। मानव जीवन के सभी कार्य इस क्रिया के उत्पाद हैं तथा मानवीय व्यवहार के प्रत्येक क्षेत्र में यह मानवीय सर्वोत्कृष्टता की पहचान है। सृजनशील बालक ही गणितज्ञ, वैज्ञानिक, चिकित्सक, अभियन्ता, कलाकार, संगीतकार, शिक्षक, मूर्तिकार, चित्रकार, लेखक, कवि, आलोचक, चलचित्र अभिनेता, सामाजिक कार्यकर्ता आदि होते हैं, जिनमें अनेकों क्षेत्रों की जटिलतम समस्याओं को समाधान करने की योग्यताएं होती हैं और इन्हीं क्षेत्रों में व्यक्ति सृजन कार्य करके समाज में मौलिक योगदान दे सकता है। यदि व्यक्ति में सृजनात्मकता न हो तो शायद शिक्षा के पाठ्यक्रम के अनेक विषयों का मात्र सैद्धान्तिक ज्ञान ही वह कर सकता है। उस ज्ञान को व्यवहारिक रूप नहीं दे सकता। विभिन्न शिक्षण विधियों में भी सृजनात्मकता का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

सृजनात्मकता के महत्त्व की पुष्टि करते हुए मैस्लो (1958) ने बताया है कि आत्मानुभूति व्यक्ति की आधारभूत आवश्यकता है यह सृजनात्मक व्यक्ति में पायी जाती है। आज देश में वैज्ञानिक विधियों की खोज तथा तकनीकी उपलब्धियों के लिए सृजनात्मक व्यक्तियों को ढूढ़ना एक आवश्यक कार्य है।

ट्रोबिज (1966) ने सृजनात्मकता के महत्व को स्पष्ट किया है कि सृजनशील व्यक्ति समाज में वह दे सकता है जो बुद्धिमान व्यक्ति नहीं। इसी प्रकार बुद्धिमान व्यक्ति जो दे सकता है वह सृजनशील व्यक्ति नही। इसी प्रकार से कम सृजनशील व्यक्तियों की सम्पूर्ण उपलब्धियाँ, उच्च सृजनशील व्यक्ति के किसी भी उपलब्धि की बराबरी नहीं कर सकती है।

निःसंदेह सृजनात्मक की माप और सृजनशील बालकों की पहचान करना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। सृजनात्मकता ही समाज और राष्ट्र के विकास में सहायक होती है।

सृजनात्मकता का स्वरूप–

सर्जना का आधार चिंतन है। यदि हम प्रश्न करें कि एक और एक कितने होते हैं, इसका सीधा सा उत्तर है तो इस प्रकार के उत्तर में चिंतन सरल एवं यांत्रिक होता है। दूसरे सोचने के पर्याप्त अवसर होते हैं। अभिसारी चिंतन का विशेष लक्ष्य होता है। जिस चिंतन में प्रत्यक्षतः, यांत्रिकता रहती है उसे अभिसारी चिंतन कहते हैं। चिन्तन तथा सर्जन के संदर्भ में पहली बार गिलफोर्ड ने विचार किया था। व्यक्ति अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए अग्रसर रहता है और उसकी संतुष्टि होने पर वह भविष्य में उन्नति करता है। संतुष्टि का जांच मूल्यांकन के साथ–साथ अभिसारी चिंतन सर्जनात्मक शक्ति का तीसरा पक्ष है। प्रायः देखा जाता है कि स्काउट्स साधनों के अभाव में कामचलाऊ स्ट्रेचर लाठियों से बना लेते हैं। किसी वस्तु के अभाव में दूसरी वस्तु से काम चला लेते हैं। इसका सीधा सा अर्थ है कि व्यक्ति में परिस्थिति की पुनर्व्याख्या की शक्ति होनी आवश्यक है। इसे कार्यात्मक स्थिरता भी कहते हैं।

शिक्षा में सर्जनात्मकता एक महत्वपूर्ण तत्व है। सभी बालकों के लिए यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है। सर्जनात्मकता का स्तर प्रत्येक बालक के लिए भिन्न हो

सकता है। छात्रों को सर्जन का अवसर कक्षागत परिस्थितियों में दिये जाने चाहिए। इस प्रकार के अवसरों में सोच, स्वतंत्रता तथा साहस के गुण होने चाहिए। समस्त कक्षा शिक्षण सर्जनात्मक होना चाहिए। सर्जनात्मकता में रटन्त प्रणाली का बहिष्कार किया जाता है। आज की शिक्षा प्रणाली में मौलिकता तथा नवीनीकरण का ध्यान नहीं रखा जाता है।

सच यह है कि सर्जनात्मकता वह गुण है जिसे बोधगम्य होना चाहिए तथा उसका अनुकरण करना चाहिए।

अपसारी, अभिसारी चिंतन का मूल्यांकन सर्जनात्मकता के अध्ययन के लिए किया जा सकता है। गिलफोर्ड ने अपसारी चिंतन के लिए अनेक परीक्षणों का निर्माण किया है सामान्यतः बुद्धि परीक्षण अपसारी चिंतन का परीक्षण नहीं है। सर्जनात्मकता के परीक्षण के लिए इसका परीक्षण किया जाता है।

सर्जनात्मकता की पहचान हेतु गिलफोर्ड ने निम्नलिखित तत्वों को बताया है–

1–तात्कालिक स्थिति से परे जाने की योग्यता

जो बालक तात्कालिक संदर्भ में परिस्थितियों के आधार पर उससे भी आगे जाकर चिंतन, मनन तथा अभिव्यक्ति करते हैं, उनमें सर्जनात्मकता के लक्षण पाये जाते है।

2–समस्या या उसके अंश को पुनर्व्याख्या

जिन बालकों में किसी तथ्य, समस्या की सम्पूर्ण या आंशिक रूप में पुनर्व्याख्या करने की क्षमता होती है, सर्जनात्मक शक्तियों से पूर्ण होते हैं।

3–असामान्य तथा प्रासंगिक विचारों का सामंजस्य

वे बालक जो चिंतन व तर्क, कल्पना द्वारा प्रासंगिक किन्तु असामान्य विचारों के साथ सामंजस्य स्थापित करते हैं, सृजनशील होते हैं। ऐसे बालक

आत्मभिव्यक्ति के लिए चुनौती को स्वीकार कर लेते हैं और आत्मनिष्ट हो क्रियाशील हो जाते हैं।

4–अन्य व्यक्ति के विचारों में परिवर्तन करना

तर्क चिंतन तथा प्रमाणों के माध्यम से मौलिक एंव तर्कसंगत अभिव्यक्ति के द्वारा किसी अन्य व्यक्ति के विचार विश्वास तथा धारणा में परिवर्तन करने वाले व्यक्ति सृजनशील होते हैं।

सृजनात्मकता का स्तर

टेलर (1959) के अनुसार सृजनात्मकता के निम्न पाँच स्तर होते हैं–

1. **अभिव्यंजक सर्जनात्मकता–** इस स्वतंत्र अभिव्यक्ति में कौशल, मौलिकता तथा उत्पादों की गुणवत्ता इतनी महत्त्वपूर्ण नहीं होती जितनी सृजन करने की प्रक्रिया।
2. **उत्पादक सर्जनात्मकता–** इसमें कलात्म या वैज्ञानिक उत्पाद शामिल किए जाते हैं जहाँ स्वतंत्र क्रियाओं को नियंत्रित या सीमित करने तथा परिष्कृत उत्पादों का निर्माण करने के लिए प्रविधियाँ विकसित करने की प्रवृत्ति होती है।
3. **आविष्कारशील सर्जनात्मकता –** इसमें अन्वेषक या जाँच–पड़ताल करने वाला व्यक्ति सामग्री, विधि, माध्यम और प्रविधियों का प्रयोग करने में अपनी निपुणता प्रदर्शित करता है।
4. **नवाचारात्मक सर्जनात्मकता–** इसमें रूपान्तरण द्वारा सुधार निहित होता है।
5. **आविर्भावात्मक सर्जनात्मकता–** इसमें पूर्णतः नए नियमों या मान्यताओं का विकास शामिल है जिनके आधार पर कला, लेखन, संगीत, विज्ञान आदि के नए सम्प्रदाय पोषित होते है।

सृजनात्मक व्यक्तित्व की विशेषतायें

टारेन्स ने अनेक सृजनात्मक व्यक्तियों के व्यवहारों का विशद् अध्ययन करने के उपरान्त सृजनात्मक व्यक्ति की 84 व्यक्तित्व विशेषताओं की सूची तैयार की थी। सृजनात्मकता के मापन में सृजनात्मक व्यक्तित्व की 84 विशेषतायें महत्वपूर्ण व सार्थक भूमिका अदा करती हैं। टारेन्स की इस सूची का उल्लेख **प्रो0 एस0पी0 गुप्ता**[5] ने अपनी पुस्तक आधुनिक मापन तथा मूल्यांकन में उल्लेखित किया है जो निम्नलिखित है–

1– अव्यवस्था को स्वीकारना।

2– जोखिम उठाना।

3–दृढ़ भावनात्मकता।

4–ग्रन्थों के प्रति जागरूकता।

5–अव्यवस्था की ओर आकर्षण।

6–कठिन कार्यो को करना।

7–रचनात्मक आलोचना।

8– तीव्र व अर्न्तविवेकशील परम्परायें।

9– परार्थोन्मुख।

10–सदैव परेशान रहना।

11–रहस्यात्मक खोजों के प्रति आकर्षित होना।

12– झेंपू या लज्जालु।

13– साहसिक।

14– नम्रता की परम्पराओं को स्पष्ट करना।

15– स्वास्थ्य की परम्पराओं को स्पष्ट करना।

16– श्रेष्ठ बनने की इच्छा।

17– दृढ़ निश्यच।

18– विभेदीकृत मूल्य अधिक्रम।

19– असन्तुष्ट।

20– व्यवस्था को बिगाड़ने वाले।

21– प्रबल, हावी।

22– संवेगात्मक।

23– संवेगात्मक रूप से संवेदनशील।

24– उत्साही।

25– दोष निकालने वाला।

26– लोगों की चिंता नहीं करना।

27– जिज्ञासा से परिपूर्ण

28– प्रायः आत्म संतुष्ट प्रतीत होना।

29– एकांतप्रिय।

30– अनुभव करना कि सारी व्यवस्था गड़बड़ है।

31– निर्णय में स्वतंत्रता।

32– चिंतन में स्वतंतत्रता।

33–व्यक्तिवादी।

34–अंतः प्रज्ञात्मक।

35–परिश्रमी।

36–अंतर्मुखी।

37– व्यवहारिक योग्यता में कमी।

38– त्रुटि करना।

39– कभी न ऊबना।

40– आक्रामक व पलायनवादी न होना।

41– जनप्रिय न होना।

42– विचित्र आदतें।

43– सतत्।

44– अपने विचारों में लीन।

45– जटिल विचारों को पसंद करना।

46– अनैष्ठिक।

47– अनियमित समय पर कार्य करना।

48– प्रश्न करने की योग्यता।

49–आमूल–चूल परिवर्तनवादी।

50– वाह्य संवेदनाओं को ग्रहण करना।

51– अन्य व्यक्तियों के विचारों का ग्राही।

52– कभी–कभी पलायनवादी।

53– विचारों के दमन का विरोधी।

54– दमन को नकारना।

55– संकल्पी।

56– आत्मसात।

57– आत्म–सचेत।

58– आत्म–विश्वासी।

59– आत्मनिर्भर।

60– हँसौड़।

61– सुंदरता के प्रति संवेदनशील।

62– निश्छल।

63– शक्ति को त्यागने वाला।

64– अपने आपको थोपने वाला।

65– स्वचालित।

66– नियति को मानना।

67– छोटी–छोटी बातों से अरूचि।

68– परिकल्पनात्मक।

69– असहमत होने को तत्पर।

70– दूरगामी लक्ष्यों का आकांक्षी।

71– हठी या अड़ियल।

72– अस्थाई स्वभाव।

73– दृढ़।

74– वात्सल्य।

75– डरपोक।

76– परिपूर्ण।

77– शक्ति के परे तटस्थ।

78– कुछ असुसंस्कृत, आदिम।

79– अपरिष्कृत।

80– कहने मात्र से किसी बात को स्वीकार करने का अनिच्छुक।

81– दृष्टा।

82– बहुमुखी।

83– जोखिम उठाने को तैयार।

84– काफी विरक्त और खामोश।

सृजनात्मक में वृद्धि हेतु किये जाने वाले प्रयास–

छात्रों के सृजनात्मकता में वृद्धि के लिए शिक्षक एवं अभिभावक के लिए निम्न शैक्षिक निहितार्थ अपनाने चाहिए जिससे उनकी सृजनात्मकता में वृद्धि हो।

- लैंगिक भेदभाव न करते हुये विद्यार्थियों को समान रूप से शिक्षा दी जानी चाहिए।
- सृजनशील छात्र एवं छात्राओं की पहचान कर उनके द्वारा कक्षागत अन्तःक्रियाएं करने, प्रश्न पूछने व समस्या समाधान करने में उनका प्रोत्साहन करना चाहिए।
- शिक्षक–शिक्षिकाओं को कक्षा में ऐसा वातावरण सृजित करना चाहिए जिससे निम्न सृजनात्मकता वाले विद्यार्थी भी अपने विचार स्वतंत्र रूप से प्रकट करें।
- छात्र एवं छात्राओं को विभिन्न सूचनाओं को संग्रह करने का अवसर एवं सुविधा प्रदान करना चाहिए।
- छात्र एवं छात्राओं को सृजनात्मक चिन्तन के सिद्धान्तों को बतलायें और किसी आविष्कार विशेष में सृजनात्मक अंशों की ओर संकेत किया जाये।
- छात्र एवं छात्राओं के प्रारम्भिक स्तर पर मौलिक विचारों, कल्पनाओं आदि को समझने का प्रयत्न/प्रयास किया जाए।

- छात्र एवं छात्राओं को छोटे–छोटे मौलिक रचनाओं को प्रोत्साहन मिले तो यह प्रतिभा आगे चलकर विश्व व समाज को अनुपम कृतियां एवं उपलब्धियां प्रदान कर सकती हैं।
- शिक्षक–शिक्षिकाओं द्वारा कक्षा में ऐसा वातावरण सृजित करना चाहिए जिससे निम्न सृजनात्मकता वाले विद्यार्थी भी अपने विचार स्वतंत्र रूप से प्रकट कर सकें।
- छात्र एवं छात्राओं में सृजनात्मकता का विकास करने के लिए शिक्षक को स्वयं भी सृजनात्मक प्रवृत्ति का होना चाहिए तथा उसे चाहिए कि वह स्वयं भी साहित्य, विज्ञान, कला आदि के क्षेत्रों में सृजन कार्य करें और छात्रों के समक्ष उदाहरण प्रस्तुत करें इससे बालकों को प्रेरणा एवं प्रोत्साहन प्राप्त होगा।
- मीडिया को और सहज व प्रभावशाली बना कर ग्रामीण बालक और बालिकाओं की सृजनात्मक शक्तियों का विकास किया जा सकता है।
- छात्र/छात्राओं की मौलिकता को और प्रभावशाली बनाने के लिए मीडिया के माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा में कुछ विशेष पाठ्यक्रम व सहायक सामग्रियों को शामिल करना चाहिए।
- इस शोध कार्य के अध्ययन द्वारा छात्र/छात्राओं में सकारात्मक व्यवहार विकसित करके शैक्षिक उपलब्धि को और भी विकसित किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 कृष्णमूर्ति, जे0 (2011). *शिक्षा एवं जीवन का तात्पर्य,* वाराणसी : कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया, पृ. 91।

2 श्री अरविन्द (1999). *मानसिक शिक्षा, नयी चेतना के लिए नयी शिक्षा,* पांडिचेरी : श्री अरविन्द सोसाइटी, पृ. 36।

3 पी0डी0 पाठक (2008), शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, पृ0 295

4 पी0डी0 पाठक (2008), शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, पृ0 296

5 गुप्ता, एस0पी0 (2008). *आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन,* इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन, पृ0 343–345।